

तत्पर adj. f. स्त्री 1) (तद् + पर adj.) *auf den, — darauf folgend:* तत्परं वर्त्म Megh. 19. गण्डो कपोली तत्परो हनुः AK. 2, 6, 2, 41. घनागते हि श्वः परश्चस्तत्परे ऽहनि 3, 5, 22. Davon तत्परत्वं n. *das dem-nachstehend-Sein* Kāṭh. Ça. 1, 4, 16, 5, 5. — 2) (तद् + पर subst. n.) a) *den u. s. w. als höchstes Ziel habend, nur mit dem beschäftigt, ganz dem ergeben, nur auf ihn —, darauf gerichtet:* लीना ब्रह्मणि तत्परा योनिमुक्ताः ÇVETĀÇV. Up. 1, 7. (तस्याः) परिचर्या स्वयं शक्रश्चकारिण्येत्य तत्परः R. 1, 46, 9. N. 21, 14. Bhāg. P. 4, 13, 6. Mārka. P. 23, 61. तया लोकगुरुः — झाराधितो द्विजश्रेष्ठ तत्परेणा समाधिना MBh. 3, 12811. — b) *ganz womit beschäftigt, ganz Jmd oder einer Sache ergeben* AK. 3, 1, 9. H. 384. Die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend: कर्तव्ये तत्परो युक्त इत्युच्यते P. 6, 2, 66, Sch. भर्तृतत्परा Jāśn. 1, 83. पितृपूजनं M. 3, 262. स्वार्थसाधनं 4, 196. 9, 253. N. 16, 22. BHARTṚ. 3, 5. RAḠH. 1, 66, 2, 5. MEḠH. 10. जृम्भणात्-त्पराणि (घङ्गानि) R̥t. 6, 9. PAÑKĀT. III, 89. KATHĀS. 10, 98. RĀGA-TAR. 5, 263. स्वार्थं 292. बाहुपुङ्खितत्परो KATHĀS. 3, 46. Davon nom. abstr. तत्परता f.: तत्परतार्थेषु Hit. IV, 96. — Nach Wils. m. *the thirtieth part of the time of the twinkling of the eye.* — Vgl. तस्स, तस्स, तद्वात्र, तात्पर्य.

तत्पुरुष (तद् + पु०) m. 1) *der Urgeist:* श्रो तत्पुरुषाय विचक्रे मरुदे-वाय धीमहि TAITT. ĀR. 10, 1, 5, 6. KĀṬH. 17, 1 in Ind. St. 3, 460. तत्पुरुषरुद्रो-त्पति Verz. d. Oxf. H. 44, b, 15. — 2) *dessen Diener* Kāṭh. Ça. 7, 1, 3. — 3) *ein Compositum, in welchem das hintere Glied vom vorderen nur näher bestimmt wird, so dass dasselbe seine ursprüngliche Selbständigkeit bewahrt d. i. in seiner ursprünglichen grammatischen und begrifflichen Kategorie verbleibt, während dasselbe im Bahuvrīhi mit der vorangehenden näheren Bestimmung zum blossen Merkmal eines ausserhalb der Zusammensetzung liegenden Begriffes herabsinkt,* P. 2, 1, 22. fgg. Der Karmadhāraja und der Dvigu bilden Unterabtheilungen des Tatpurusha 1, 2, 42, 2, 1, 33. Das Wort in der unter 2. angegebenen Bed. ist als einzelnes Beispiel einer solchen Art von Zusammensetzungen zum Namen der ganzen Klasse geworden; vgl. द्विगु, बहुव्रीहि, कृत्, कृत्य, तद्धित.

तत्पूर्व (तद् + पूर्व) adj. *zum ersten Mal stattfindend, geschehend:* इषु-प्रयोगे तत्पूर्वसङ्गे RAḠH. 2, 42; vgl. P. 6, 2, 162.

तत्प्रभाते (तद् + प्रभाते, loc. von प्रभाते) adv. *am frühen Morgen darauf* VET. 12, 1, 13, 8.

तत्फल (तद् + फल) 1) adj. *dieses als Frucht, als Lohn habend.* — 2) m. a) *Wasserpflanze (कुवलय).* — b) *ein best. heilkräftiges Kraut (कुष्ठ).* — c) *ein best. Parfum (चौर)* DHAR. im ÇKDR.

तत्र (von 1. त) adv. correl. mit पत्र. 1) = loc. von 1. त in allen Zahlen und Geschlechtern P. 5, 3, 10. 6, 3, 35. VOP. 7, 99. अमी ये सप्त रश्मयस्तत्रा मे नाभिरातता RV. 4, 108, 9. यौ ते मातान्ममार्जं ज्ञातायाः पतिर्वदेनी। दुर्णामा तत्र मा गृधत् AV. 8, 6, 1. कर्मके तत्र दर्शनात् Einige (behaupten, dass der Schall) *ein Hervorgebrachtes sei, weil man bei ihm gewahrt (wie er hervorgebracht wird)* ĠAIM. 1, 6. धर्मार्थो पत्र (= यस्मिन्) न स्यातो शुश्रूषा वापि तद्विधा। तत्र विद्या न वसव्या M. 2, 112. यस्मिन्नेव कुले — तत्र 3, 60. प्रसङ्गं तत्र 4, 186. तत्र (d. i. श्राद्धे) ये भोजनीयाः स्युः 3, 124. तत्र (d. i. ब्रह्मज्ञाननि) अस्य माता सावित्री पिता वाचार्य उच्यते 2, 170. विश्वासस्तत्र नाचितः Hit. I. 82. तेभ्यस्तत्र (d. i. चुनर्दृश्याम्) प्रदीयते Jāśn. 1, 263.

तत्रैवं सति = तस्मिन्नेवं सति BHAG. 18, 16. श्येते तु तत्र (d. i. उत्पले, H. 1164. AK. 2, 4, 2, 54. तत्रैव दिने KATHĀS. 4, 37. पथ्यडक्तो ऽभूद्दृष्टवान्धैः। तत्र तत्र स हा भद्रेति प्रत्युत्तरं ददौ immer gab er darauf zur Antwort VID. 179. तस्या गात्रेषु पतिता तेषा दृष्टिः — तत्र तत्रैव सक्ताभूत् immer nur auf diesen haftete der Blick N. 5, 8. यत्र तत्राश्रमे वसन् in welchem es auch sei M. 3, 50. 6, 66. 12, 102. तत्र (d. i. डुःखे) अस्य यदि साहाय्यं कुर्याम् dabei BRĀHMAN. 1, 9. न तत्र दोषं ग्रहीष्यति ÇĀK. 40, 5, v. 1. यत्सा तेन पारित्यक्ता तत्र न क्रोद्धुमर्हति darüber zürnen N. 18, 11. देवानां मानुषं मध्ये यत्सा पतिमविन्दत। तत्र तस्या भवेत्यायं विपुलं दाडुधारणम्॥ dafür N. 6, 6. तत्र तौ मन्युराविशत् SUND. 4, 16. ये च — क्लिष्ट्यन्ति कुप्यन्ति च यत्र तत्र über alles Mögliche, über jede Kleinigkeit MBh. 13, 514. तत्राह in Bezug darauf Sch. zu ÇĀK. 42. नदीवेगस्तत्र कारणम् dabei. davon ÇĀK. 21, 20. निरीतयः। यन्मदीयाः प्रजास्तत्र हेतुस्त्वद्ब्रह्मवर्चसम् RAḠH. 1, 63. इति विज्ञप्तस्तत्र राजा तया स्वयम् davon unterrichtet KATHĀS. 4, 72. unter diesen, darunter: अरुस्तत्र (d. i. राज्यकोः) उदगयन् राज्ञिः स्यादन्तिपाणयन्म् M. 1, 67. तत्र (d. i. अधिजननेषु) यद्ब्रह्मज्ञानमास्य 2, 170. तत्र (d. i. सुरेषु) एनमब्रवीद्ब्रह्मा R. 1, 63, 2. तत्रैकः KATHĀS. 4, 20. तत्र पूर्वशतवर्गः Hit. 1, 8. SĀH. D. 39, 13. — 2) *da, dort; dahin, dorthin:* तत्र गावः कितव तत्र ज्ञाया RV. 10, 34, 3. यत्र सोमः सद्मितत्र भद्रम् AV. 7, 18, 2. यत्र घोवा वर्दति तत्र गच्छतम् RV. 4, 133, 7. 5, 3, 10. तत्र स्थितः M. 7, 146. 202. 217. 225. INDR. 1, 5. 6. N. 3, 12. तत्रस्य 16, 25. R. 4, 53, 24. 63. 27. KATHĀS. 7, 33. आज्ञगाम ततस्तत्र यत्र राजा N. 7, 1. 4, 22. 10, 1. M. 3. 36. 7, 25. R. 1, 60, 10. 11. ÇĀK. 32, 15. 36, 9. VID. 157. 158. 167. तत्र तत्र hier und dort, allerwärts; hierhin und dorthin, überallhin: अथ्यन्तान्वि-विधान्कुर्यात्तत्र तत्र M. 7, 81. N. 17, 35. 46. MBh. 13, 2830. INDR. 2, 31. Hip. 2, 31. SUND. 1, 33. Buāg. P. 4, 16, 21. 18, 30. 21, 1. देवं नयति पुरुषकारः संचितस्तत्र तत्र MBh. 13, 341. यत्र तत्र wo es auch sei, am ersten besten Orte; wohin es sich trifft, an den ersten besten Ort: नेमं धर्मं यत्र तत्र प्रजल्पेत् 3686. तया त्यक्ता गमिष्यामि यत्र तत्र 3, 5997. सयत्र तत्रापि गतः सदैव मरुज्ञानस्याधिपत्यं करोति wohin auch 1084. — Kanu mit einem partic. auf त compon. werden P. 2, 1, 46. — 3) *bei dem Anlass, bei der Gelegenheit, in dem Falle, dann:* यास्तत्र चौरान्गच्छ्यान् M. 8. 34. पुत्रः कनिष्ठो ज्येष्ठायो कनिष्ठायो च पूर्वजः। ऋथं तत्र विभागः स्यादिति चेत्संशयो भवेत् ॥ 9, 122. N. 1, 30. 8, 28. 7, 3. तिष्ठ त्वं स्यावर इव यावदेव नलः क्वचित्। इतो नेता हि तत्र त्वं शापान्मोहयसि मत्कृतात् ॥ 14, 6. 11. R. 1, 8, 4. 2, 21, 54. KATHĀS. 5, 118. यत्र — तत्र RV. 6, 78, 11. 17. यत्रेन्द्रं देवताः पर्यवृञ्चन् तत्रेन्द्रः सोमपीयेन व्याधृत्य At. Br. 7, 28. M. 2, 14. 200. 8, 12. 14. 76. 104. 293. 336. Jāśn. 2, 84. Cit. beim Schol. zu ÇĀK. 8, 20. P. 4, 1, 3, Sch. यद् — तत्र RV. 6, 87, 4. यत्पृष्ठीभिरधिरोमहे। ना हिंसोस्तत्र नो भूमे AV. 12, 1, 34. यदा — तत्र PAÑKĀT. I, 432. यदि — तत्र M. 8, 238. 9, 120. 134. 210. Hit. I, 25. चेद् — तत्र M. 8, 295. 9, 205. — Bisweilen ist die Bed. von तत्र so abgeschwächt, dass man das Wort in der Uebersetzung gar nicht wiederzugeben vermag, z. B. in der folg. Stelle: नाथ स्मरसि यत्तत्र तव देविगृहे निशि। मासाते त्वमिहागच्छेरित्युक्तं दिव्यया गिरा ॥ तत्र चाथ गतो मासो भवतस्तच्च विस्मृतम्। KATHĀS. 18, 208; hier deutet das 2te तत्र an, dass der Monat, welcher heute abgelaufen ist. in Bezug stehe mit dem Monate, von welchem damals die Rede ging.

तत्रत्य (von तत्र) adj. *dortig* P. 4, 2, 104, VArtt. 1. VOP. 7, 111. Hit. 88.